बुँदेलखण्ड का इतिहास

आठवाँ भाग

लेखक - दीवान प्रतिपाल सिंह

प्रकाशक - पृथ्वी सिंह बुन्देला
प्रतिपाल परिसर छतरपुर

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक परिचय

पृथ्वी सिंह बुन्देला

जन्म - ५ जनवरी १९२६ ई.
जन्म स्थान - छतरपुर
पिता - दीवान प्रतिपाल सिंह जू देव
माता - श्रीमती सीता जू
शिक्षा - बी.ए., होम्योपैथिक डिप्लोमा
सम्मान - म.प्र. शासन से उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए सम्मानित शिक्षक, शास. शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर, पुरस्कृत चित्रकार, सम्मानित समाजसेवी।
पता - दीवान प्रतिपाल परिसर
पहरा हाउस, सागर रोड, छतरपुर (म.प्र.)
फोन - 07682-243574
मो. 9926182801

सम्पादक परिचय

डॉ. बहादुर सिंह परमार

जन्म - १६ जुलाई १९६३,
जन्म स्थान - रानीपुरा, (छतरपुर)
शिक्षा - एम.ए., पी-एच.डी.
रचनाएं - 1. अमरकांत का कथा साहित्य
2. बुन्देलखण्ड की छन्दबद्ध काव्य परंपरा
सम्पादन - 1. पत्रिका बुन्देली बसंत
2. बुन्देलखण्ड की साहित्यिक धरोहर
3. छतरपुर जिले की लोक कथाएं
4. बुन्देली व्यंजन आदि
सम्प्रति - शास. महाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय छतरपुर में सहा. प्राध्यापक हिन्दी
संपर्क - एमआईजी -7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी छतरपुर (म.प्र.) मो. 9425474662

Scanned with OKEN Scanner

बुँदेलखंड का इतिहास

(आठवाँ भाग)

लेखक

दीवान प्रतिपाल सिंह

प्रकाशक

कुँवर पृथ्वी सिंह बुन्देला

सम्पादक

डॉ. बहादुर सिंह परमार

Scanned with OKEN Scanner

©कुँ. पृथ्वी सिंह बुन्देला

प्रथम प्रकाशन : सन् 2009

संख्या : 500 प्रतियाँ

कीमत : 300 रुपये

मुद्रक : जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या0
छतरपुर (म.प्र.)

प्राप्ति स्थल : डॉ. हरिसिंह घोष
घोषयाना मुहल्ला, संकट मोचन मार्ग
छतरपुर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अध्याय पहला - ओरछा राज्य १

- रुद्रप्रताप २
- भारती चंद ६
- मधुकर शाह ६
- रामशाह तथा वीर सिंह १३
- वीर सिंह देव २८
- जुझार सिंह ३६
- देवी सिंह ४६
- मध्यवर्ती समय ५०
- पहार सिंह ५२
- सुजान सिंह ५४
- इन्द्रमणि ५४
- यशवंत सिंह ५५
- भगवंत सिंह ५५
- उदोत सिंह ५५
- पृथ्वी सिंह ६०
- सावंत सिंह ६२
- हटे सिंह ६३
- मान सिंह ६४
- भारती चंद ६५
- विक्रमादित्य ६६
- धर्मपाल सिंह ६६
- तेज सिंह ६६
- सुजान सिंह ६६
- हमीर सिंह ७०
- प्रताप सिंह ७३
- मुगल साम्राज्य और बुन्देले राजा ८०

Scanned with OKEN Scanner

अध्याय दूसरा - ओरछा की जागीरें ६१

- कटेरा - ६१
- नारहट - ६४
- अष्टबंधु अथवा अठगढ़ियाँ जागीरें - १०५
- टोड़ी फतेहपुर - ११४
- ढुरबई - १२३
- चिरगाँव - १३१
- खनियाधाना
- सिंधवाहा और गौना - ६३
- डोंगरा कलां - ६६
- बिजना - १०६
- बंका पहाड़ी - ११८
- ककरबई - १२८

अध्याय तीसरा - चंदेरी राज्य बुन्देला (बार-बानपुर) १४३

- रामशाह - १४५
- देवी सिंह - १४६
- दुर्जन सिंह - १५३
- अनिरुद्ध सिंह - १५५
- मोर प्रहलाद - १५७
- भारतशाह - १४७
- दुर्ग सिंह - १५२
- मान सिंह - १५४
- रामचन्द्र - १५५
- मर्दन सिंह - १५६

अध्याय चौथा - चंदेरी की जागीरें १७०

- देलवाड़ा - १७०
- कोटरा - १७६
- गुगरवारा - १७७
- पाली - १७८
- राजगढ़ - १८०
- जाखलौन - १७२
- मुहारौ - १७७
- रजवाड़ा - १७७
- गदयाना - १७६
- भैलोनी - १८१

अध्याय पाँचवाँ - दतिया राज्य १८२

- भगवान राव - २०१
- दलपत राव - २०५
- इन्द्रजीत - २१२
- पारीछत - २१८
- भवानी सिंह - २२२
- शुभकरण - २०२
- रामचन्द्र - २०६
- शत्रुजीत - २१६
- विजैबहादुर - २२०
- गोविन्द सिंह - २२४

❄❄❄❄❄

Scanned with OKEN Scanner

लेखक परिचय

दीवान प्रतिपाल सिंह

पिता - महाराज कुमार दीवान भानु सिंह जू देव

जन्म - पौष कृष्ण ८ बुध, संवत् १९३८ विक्रमी

अवसान - जनवरी १९३७ ई.

जन्म स्थान - ग्राम पहरा, छतरपुर राज्य

शिक्षा - सन् १९०१ ई. में आगरा से मैट्रिकुलेशन

रचनाएं - 1. आर्य देव कुल का इतिहास

2. बुन्देलखण्ड का इतिहास (बारह भागों में)

3. वीर बाला (उपन्यास)

4. खेल शतक

5. खेल पच्चीसी

संपादन - श्रृंगार कुंडली, विदुर , प्रजागर - कृष्णकवि,

छत्रप्रकाश -लाल कवि, होली हजारा

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह जी ने बुंदेलखण्ड का विशालकाय इतिहास लिखकर अपने देश की सच्ची सेवा की है। यह इतिहास ही उनका यथार्थ जीवन है। दीवान जी जैसे कर्मठ तथा स्वदेश प्रेमी पुरूष के लिए पुण्यमय कार्य करना सर्वथा योग्य ही हुआ है। बुन्देलखण्ड के इतिहास का अभाव हमें बहुत दिनों से खटक रहा था। अवसर पाकर उस अभाव की पूर्ति एक अपने ही प्रिय शिष्य द्वारा हुई यह हमारे लिए गौरव को बढ़ाता है।

■ **लाला भगवानदीन 'दीन'**

दीवान प्रतिपाल सिंह लिखित बुन्देलखण्ड का इतिहास सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। दुर्भाग्य से अस्सी वर्ष बीतने के बाद भी इसका अब तक प्रथम भाग ही प्रकाशित है। शेष अप्रकाशित हैं। सुखद यह है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी उनके सुपुत्र कुँवर श्री पृथ्वी सिंह उन सभी भागों को सुरक्षित रखे हुए हैं .... जिस दिन सभी खंड प्रकाशित हो जाएंगे यह साहित्य और इतिहास जगत में ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

■ **डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंयाँ**

Scanned with OKEN Scanner

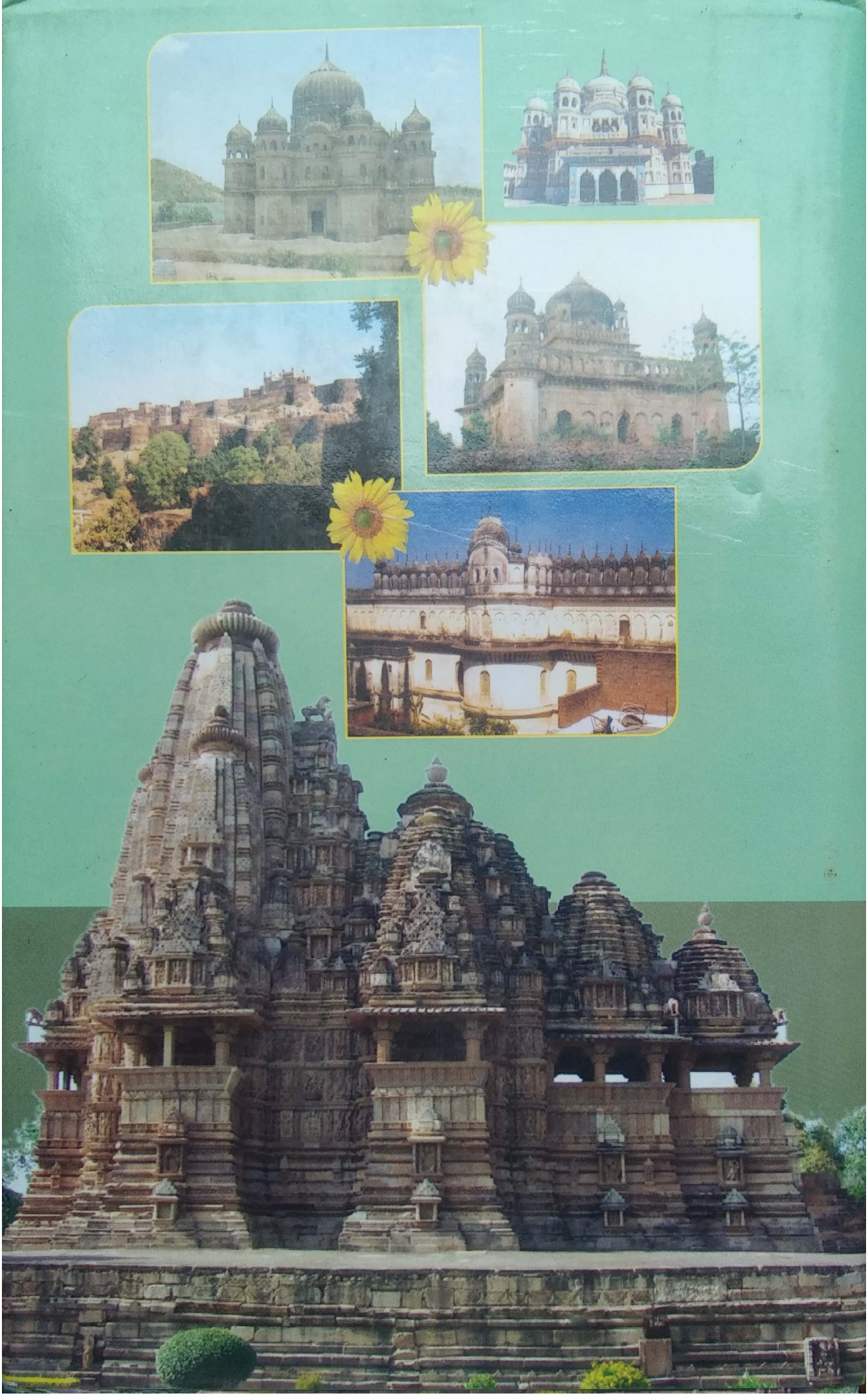

Scanned with OKEN Scanner